

प्रयोजनमूलक हिंदी: अभिप्राय  
और परिव्यासि  
डॉ. विभा कुमारी, हिंदी विभाग,  
विश्वेश्वर सिंह जनता  
महाविद्यालय राजनगर



- हिंदी को गति देने में प्रयोजनमूलक हिंदी की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। यह साहित्यिक हिंदी से भिन्न हिंदी को एक अलग पहचान देती है। आज के जीवन की बढ़ती गतिविधियों सँग प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता समीचीन है। प्रयोजनमूलक हिंदी अत्यधिक शक्तिशाली है आनेवाले समय में विश्व – स्तर पर हिंदी के महत्व को स्थापित करने में प्रयोजनमूलक हिंदी की अति महत्वपूर्ण भूमिका है।

- प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप
- बोलचाल की हिंदी
- व्यापारी हिंदी
- कार्यालयी हिंदी
- तकनीकी हिंदी
- शास्त्रीय हिंदी
- साहित्यिक हिंदी

- हिंदी को रोजगार की भाषा बनाने वाली हिंदी है - प्रयोजनमूलक हिंदी
- कम्प्यूटर और इंटरनेट के माध्यम से ग्लोबल ग्राम के उद्देश्य को पूरा करती है  
– प्रयोजनमूलक हिंदी

इक्कीसवीं सदी के सूचना – क्रांति के युग में विशेष योगदान दे रही है –  
प्रयोजनमूलक हिंदी

- आज के वैश्वकरण के युग में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बहुतायत होती जा रही है। अनेक भारतीय युवा इन कम्पनियों में कार्यरत हैं और प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग करते हुए उसे विश्व – स्तर पर एक विशेष पहचान दे रहे हैं। प्रयोजनमूलक हिंदी आज अंग्रेजी के वर्चस्व को तोड़ पाने में भी सक्षम हो रही है। प्रयोजनमूलक हिंदी की बढ़ती हुई परिव्याप्ति से भारतीय युवाओं को अधिक रोज़गार मिलने की उम्मीद भी बढ़ रही है।